

रॉबर्ट वैनॉय , प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 12

तर्क दूसरे यशायाह के पक्ष और विपक्ष में (यशायाह 40-66)

1. ड्यूटेरो -यशायाह (यशायाह 40-66) अवधारणाएं और विचार भिन्न हैं
2. भाषा और शैली में अंतर

ड्यूटेरो -यशायाह के तर्कों के बारे में बात कर रहे हैं। पहला यह था कि "अवधारणाएँ और विचार भिन्न-भिन्न होते हैं।" यह शायद ही कोई ठोस तर्क है. दूसरा तर्क: "भाषा और शैली में अंतर।" मुझे लगता है कि यह अधिक महत्वपूर्ण तर्क है। ड्राइवर के परिचय में, उदाहरण के लिए, पृष्ठ 238 और 239 पर, वह बहुत सारे शब्दों को सूचीबद्ध करता है जो यशायाह 40 से 66 में आते हैं लेकिन 1 से 39 में नहीं आते हैं। और फिर वह उन शब्दों को सूचीबद्ध करता है जो 40 से 66 में अक्सर आते हैं लेकिन केवल कभी-कभार ही 1 से 39 तक। तो आपको शब्दों की ये लंबी सूची मिलती है जो या तो पहले भाग में बिल्कुल नहीं आती हैं, या पहले भाग में बहुत कम होती हैं लेकिन दूसरे भाग में आती हैं। इस प्रकार के विश्लेषण पर ही इस तर्क का अधिकांश भाग आधारित है। मुझे लगता है कि जवाब में यह कहा जा सकता है कि यह बहुत आश्चर्य की बात नहीं है कि आपको यशायाह 40 से 66 में ऐसे शब्द मिलेंगे जो पुस्तक के पहले भाग में नहीं हैं क्योंकि शब्द का उपयोग काफी हद तक विषय वस्तु पर निर्भर करता है। यदि आपके पास अलग-अलग विषय-वस्तु है, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आपकी शब्दावली भी अलग-अलग होगी। इसलिए मुझे नहीं लगता कि उन शब्दों की सूची जो एक भाग में आते हैं और दूसरे भाग में नहीं, बहुत अधिक ठोस है।

एक। 'अनोकी' के स्थान पर ' अनोकी' ['मैं' के 2 रूप]

मुझे लगता है कि शैली के तर्क का सबसे मजबूत हिस्सा यह है कि कुछ भाषाई विषमताओं को इंगित किया गया है जिनके बारे में कहा जाता है कि वे बाद के समय के उपयोग से संबंधित हैं। बाद के समय के उपयोग से संबंधित भाषाई विचित्रताएँ यशायाह 40 से 66 में पाई जाती हैं। अब ड्राइवर पृष्ठ 240 पर इसके बारे में बात करता है। इसमें शामिल

होना बहुत तकनीकी रूप से शामिल हो जाता है। मैं इसके बारे में बहुत कुछ नहीं करने जा रहा हूँ लेकिन मैं कहूँगा कि यहां भी तर्क कुछ ऐसा नहीं है जो निर्णायक हो। जीसीएच एल्डर्स ने *ओल्ड टेस्टामेंट* के अपने परिचय में - यह एक डच कार्य है - लेकिन एल्डर्स कहते हैं, उदाहरण के लिए, इसका एक उदाहरण लेने के लिए, एक तर्क दिया गया है कि शैली में अंतर ड्यूटेरो -इसैया में मजबूत प्राथमिकता में देखा जाता है प्रथम व्यक्ति एकवचन सर्वनाम ' *अनी*' *अनोकी*' के बजाय। इसलिए ड्यूटेरो -इसैया ' *अनोकी*' के बजाय ' *एनी*' को प्राथमिकता देते हैं, और ऐसा कहा जाता है कि यह बाद के समय के भाषाई उपयोग को इंगित करता है। अब, जो तरीका काम करता है वह यशायाह 40-66 में है; ' *अनोकी*' के बजाय ' *अनी*' का इसका भारी उपयोग बाद के समय के उपयोग को दर्शाता है। वे उस प्रकार का तर्क प्रस्तुत करते हैं। अब एल्डर्स अन्यत्र इसके उपयोग को देखना है। उदाहरण के लिए, हाग्वै में आपके पास ' *एनी*' 5 बार और ' *अनोकी*' नो बार है। अब आप देखते हैं कि हाग्वै निर्वासन के बाद है, इसलिए आप हाग्वै के साथ निर्वासन के बाद के समय में हैं और आपके पास ' *अनोकी*' का बिल्कुल भी उपयोग नहीं है। जकर्याह में: ' *अनी*' 9 बार, ' *अनोकी*' नो बार। अब हाग्वै और जकर्याह दोनों निर्वासन के बाद हैं। यदि आप ईजेकील जाते हैं, तो आपके पास 162 बार ' *एनी*' और कुछ बार ' *अनोकी*' होता है। वह इसे गिनता नहीं है, लेकिन इसका प्रयोग बस कुछ ही बार किया जाता है। दूसरे शब्दों में यह घटित होता है। वह ईजेकील में है। अब ईजेकील निर्वासन के बाद नहीं है, इसलिए आप पहले के समय की ओर वापस जा रहे हैं। आप यहजेकेल के साथ निर्वासन के समय में हैं। अब आल्डर्स का कहना है कि यह स्पष्ट है कि 40-66 के यशायाह के समय में ' *अनोकी*' का उपयोग न करने की प्रवृत्ति यहजेकेल के समय तक आगे नहीं बढ़ी थी क्योंकि यशायाह 40-66 में आपको यह 21 बार मिला है। दूसरे शब्दों में, ऐसा प्रतीत होता है कि ये अध्याय यहजेकेल से भी पहले के हैं। तो वे निर्वासन के समय के नहीं बल्कि निर्वासन से कुछ समय पहले के हैं, यदि आप उस प्रकार के उपयोग को देखें। इसलिए यदि आप भाषाई विषमताओं के मामले में पड़ते हैं, तो आप उस तरह की चर्चा में पड़ जाते हैं; और यहां ' *अनी*' और ' *अनोकी*' के उपयोग के साथ, यह निश्चित रूप से कुछ ऐसा नहीं है जो निर्णायक हो।

बी। इस प्रकार भगवान कहते हैं [पूर्ण / अपूर्ण] दूसरी ओर, आपके पास अध्ययन हैं जो पुस्तक के दो खंडों के बीच भाषाई समझौते के बिंदुओं को प्रदर्शित करते हैं। इसलिए यदि आप भाषा और शैली में उतरते हैं तो आपको कुछ अनोखी प्रकार की भाषाई चीजें मिलेंगी जो आपको पुस्तक के दोनों हिस्सों में मिलेंगी जो इस तरह के विश्लेषण का उपयोग एकता के लिए करती हैं न कि विभाजन के लिए। उदाहरण के लिए, आप "प्रभु यों कहते हैं" अभिव्यक्ति से परिचित हैं। और वह है *कोल' अमर अडोनाई*। अब यह अभिव्यक्ति लगभग सभी भविष्यवाणी पुस्तकों में बहुत आम है। यशायाह में उस अभिव्यक्ति का एक प्रकार है जहां आपके पास *कोल है योमर अडोनाई पूर्ण* के बजाय अपूर्ण काल के साथ। पूर्ण को अपूर्ण से बदल दिया जाता है, और वह प्रकार केवल यशायाह में प्रकट होता है, और यह यशायाह के दोनों खंडों में प्रकट होता है। दूसरे शब्दों में, यह अध्याय 1 श्लोक 11 और श्लोक 18 में प्रकट होता है। यह अध्याय 33 श्लोक 10 में प्रकट होता है। यह 40 श्लोक 1 और 40:25, 41:21, और 66:9 में भी प्रकट होता है। तो आप देखते हैं कि यह पूरी किताब में एक तरह से फैला हुआ है। यह पुस्तक के पहले खंड में और पुस्तक के दूसरे खंड में है। यह एक बहुत ही सामान्य अभिव्यक्ति का एक प्रकार है और केवल यशायाह में होता है और यशायाह के दोनों खंडों में होता है।

प्रवृत्ति यह है कि '*अनोकी के साथ*, आप जितनी देर से आगे बढ़ेंगे, इसका उपयोग कम होता जाएगा। तो आप निर्वासन के बाद के समय के करीब पहुँच जाते हैं; इसका प्रयोग निर्वासन काल में थोड़ा सा छोड़कर बिल्कुल भी नहीं किया जाता है। लेकिन यशायाह में इसका उपयोग लगभग एक तिहाई या चौथाई बार किया जाता है। यह इसका आल्डर्स प्रतिनिधित्व है। दूसरे शब्दों में, एल्डर्स कह रहे हैं कि '*एनोकी का* निर्वासन के बाद की अवधि में कम उपयोग किया जाता है। यदि आप निर्वासन के बाद और निर्वासन के बाद की पुस्तकों का विश्लेषण करें तो पता चलता है कि उनका उपयोग निर्वासन से पहले के समय की तुलना में कम होता है। दूसरे शब्दों में, यह ड्यूटेरो -यशायाह के लिए निर्वासन के बाद की देर की तारीख के लिए एक मजबूत तर्क नहीं है। कई लोगों का आरोप है कि ड्यूटेरो -

यशायाह देर से, निर्वासन के बाद आए हैं जब साइरस इज़राइल को निर्वासन से लौटने के लिए तैयार हैं। वे कहते हैं कि यह ऐतिहासिक सेटिंग है; और आमतौर पर आलोचनात्मक विद्वानों का कहना है कि साइरस पहले से ही घटनास्थल पर हैं, इस प्रकार उनके नाम का उपयोग किया जा सकता है और लेखक 539 ईसा पूर्व के आसपास साइरस के उदय के समय का रहने वाला व्यक्ति था, लेकिन यह निर्वासन के बाद के उपयोग से दो गुना से अधिक है, तो आप क्या करेंगे इस पंक्ति को देखें - यदि आप यह कहने जा रहे हैं कि ' *अनोकी का उपयोग* इस पंक्ति के साथ अधिक से कम की ओर बढ़ता है - इसका मतलब है कि आप ऊ्यूटेरो -इसैया को देर से नहीं रख सकते क्योंकि आपको उसे पूर्व में रखना होगा- निर्वासन काल.

भाषा और शैली के आधार पर यशायाह की एकता [मार्गलियोथ]

ठीक है, अब राचेल मार्गलियोथ की उस पुस्तक पर वापस जाएँ। जब आप भाषा और शैली का अध्ययन करते हैं, तो उनकी पुस्तक वास्तव में महत्वपूर्ण है। वह दोनों भागों के बीच भाषा और शैली में सहमति के आधार पर पुस्तक की एकता के लिए एक बहुत अच्छी तरह से तर्कपूर्ण मामला प्रस्तुत करती है। अपने उद्धरणों के पृष्ठ 26 को देखें। और यह उनकी किताब के पेज 5 और 6 से लिया गया है। वह कहती है, "क्रॉस ने यशायाह द्वितीय की विशिष्ट अभिव्यक्ति में अठारह शब्दों की गणना की है। वह मानता है कि उनमें से कई पाए जाते हैं" - इस पर ध्यान दें - "यशायाह प्रथम में भी। लेकिन जिन अध्यायों में क्रॉस ने यशायाह को दूसरा बताया है।" इसलिए यदि आप इन चीजों को दूसरे यशायाह के लिए अद्वितीय के रूप में सूचीबद्ध करते हैं, लेकिन फिर यदि आप इसे पहले भाग में पाते हैं, तो आप बस कहते हैं, "अच्छा वह हिस्सा दूसरे यशायाह से भी था।" मार्गलियोथ आगे कहते हैं, "लेकिन अगर ऐसी अभिव्यक्तियाँ कहीं अधिक संख्या में भी पाई जाती हैं, तो इससे क्या प्रमाण निकाला जा सकता है? क्या किसी अध्याय में विशेष शब्द या भाव कुछ सिद्ध करते हैं? क्या यह तथ्य इस अध्याय या किसी अन्य अध्याय को पुस्तक के मुख्य भाग से अलग करने का आधार देता है?"

“भविष्यवक्ताओं में एक शब्द या अधिक का कुछ अध्यायों में कई बार प्रकट होना असामान्य नहीं है, हालाँकि वे पिछले अध्यायों में से किसी में एक बार भी नहीं पाए जाते हैं। अभिव्यक्ति 'प्रभु का प्रतिशोध' लें, जो यिर्मयाह 50 और 51 में कई बार प्रकट होता है, लेकिन पूरी किताब में दोबारा नहीं मिलता है। क्या इन दोनों अध्यायों को पुस्तक से अलग करने का यह पर्याप्त कारण है? या फिर यह अभिव्यक्ति 'तलवार से मारा गया' यहजेकेल 31 और 32 में कम से कम 10 बार पाई जाती है, लेकिन पिछले अध्यायों में एक बार भी प्रकट नहीं होती है। क्या ईजेकील 31 दूसरा ईजेकील शुरू करता है? प्रत्येक भविष्यवाणी पुस्तक में केवल एक अध्याय में, या अध्यायों के समूह में कई बार आने वाले असंख्य शब्दों, वाक्यांशों और अभिव्यक्तियों को इंगित करना संभव है, पुस्तक में कहीं और नहीं।

“फिर, हम यह निष्कर्ष निकालने के लिए बचे हैं कि ऐसे शब्दों या वाक्यांशों को संदर्भ के संदर्भ में पसंद किया जाता है - विशेष अध्याय में दी गई भविष्यवाणी का विशिष्ट संदेश। इस तर्क के संबंध में कि यशायाह की पुस्तक के दो खंड भाषा और शैली में भिन्न हैं, जो बेन ज़ीव के अनुसार ऐसी चीज़ है जिसे उदाहरण से सिद्ध नहीं किया जा सकता है, हम इस पुस्तक में सैकड़ों उदाहरणों द्वारा प्रदर्शित करेंगे कि विपरीत सत्य है . दोनों खंड न केवल भाषा और शैली दोनों में समान हैं, बल्कि वे अपनी एकता के लिए उल्लेखनीय हैं कि उनके बीच की समानता को किसी भी प्रभाव के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है।

फिर वह अपनी पुस्तक में क्या करती है, अगले कथन पर ध्यान दें: “यहां दोनों भागों की एकता को प्रदर्शित करने के लिए नियोजित प्रणाली इस प्रकार है। यशायाह की पूरी किताब को विषय के आधार पर वर्गीकृत करने के बाद , हमने दिखाया है कि प्रत्येक विषय के संबंध में दोनों भाग अनगिनत समान अभिव्यक्तियों का उपयोग करते हैं, जो केवल इस पुस्तक के लिए विशिष्ट हैं। यह भी सिद्ध हो चुका है कि विशिष्ट भाव दोनों भागों में समान प्रयोग को प्रकट करते हैं। कुछ सामान्य अभिव्यक्तियाँ भी समान शब्दों के विशेष उपयोग से भिन्न होती हैं। दूसरा खंड पहले के शब्दों को उलट देता है; पहले के शब्द समूहों में अनुच्छेद केवल दूसरे में पाए जाने वाले तत्वों से बने होते हैं, और इसके विपरीत।

विषय वस्तु के आधार पर वर्गीकरण [मार्गालियोथ]

अब, मैंने इस पर उनकी पुस्तक से आपके उद्धरणों में और टिप्पणियाँ शामिल नहीं की हैं, लेकिन आप देखते हैं कि वह यशायाह की पूरी पुस्तक को विषय के आधार पर वर्गीकृत करती हैं। यहां उनके कुछ विषय हैं: ईश्वर के पदनाम, इज़राइल के लोगों के पदनाम, भविष्यवाणी के सूत्र, सांत्वना के संदेश और उस तरह की चीजें। वास्तव में, उसके पास 15 विषय शीर्षक हैं। जिस तरह से वह इस पर काम करती है वह इस प्रकार है: पहला कहें तो, ईश्वर के पदनाम। वह यशायाह में विशेष रूप से उपयोग की जाने वाली दिव्य उपाधियों को सूचीबद्ध करती है - यशायाह के लिए अद्वितीय दिव्य उपाधियाँ जो दोनों भागों में समान हैं। इज़राइल के लोगों के पदनाम: दोनों भागों में समान रूप से यहूदी लोगों को संदर्भित करने वाले 11 विशेषण। भविष्यवाणी के सूत्र: 20 परिचयात्मक सूत्र, जो पहले अध्यायों में भविष्यवाणियों को खोलते हैं, या उन पर जोर देते हैं, बाद के खंड में उनकी भाषाई समानताओं के साथ। तो आप देखिए, वह इस तरह से किताब पढ़ती है और किताब के दोनों हिस्सों में होने वाले अनूठे तरीकों से भाषाई उपयोग की समानता के सबूतों को ढेर कर देती है। मुझे लगता है कि ऐसा करके वह पुस्तक की एकता के लिए एक सशक्त मामला बनाती है। चेतावनी के शब्द देखें: फटकार के लिए 21 अलग-अलग शब्द यशायाह के लिए विशिष्ट हैं, फिर भी दोनों भागों में समान हैं।

अब, हम तर्क पर वापस आते हैं। आप देखिए, तर्क यह है कि भाषा और शैली में अंतर है। मार्गालियोथ ने इसे पलट दिया और कहा कि इस सावधानीपूर्वक विश्लेषण के आधार पर भाषा और शैली में समानता है। अब मुझे ऐसा लगता है कि इस प्रकार के तर्क के साथ, चाहे आप किसी भी रास्ते पर जा रहे हों, प्रामाणिकता का पूर्ण प्रमाण इस विधि द्वारा प्रदान नहीं किया जा सकता है, बल्कि इसका उलटा किया जा सकता है। मुझे नहीं लगता कि इस प्रकार का तर्क किसी भी तरह से निर्णायक है। मेरा मतलब है, आप कह सकते हैं कि मार्गालियोथ द्वारा पुस्तक के दोनों हिस्सों में इन अद्वितीय अभिव्यक्तियों को खोजने के साथ, सैद्धांतिक रूप से आप कह सकते हैं, “ठीक है, ड्यूटेरो -इसैया ने एक पल के लिए निर्माण की अनुमति दी। ड्यूटेरो -यशायाह पुस्तक के पहले भाग से इतना परिचित थे कि

उन्होंने अभिव्यक्ति को अपने लेखन में अनुकूलित किया और उन्हें दूसरे खंड में उपयोग किया। वे ऐसा कह सकते थे।

वन्नॉय का विश्लेषण

इसलिए मुझे नहीं लगता कि मार्गालियोथ इस तरह की पद्धति से पुस्तक की एकता को बिना किसी सवाल के साबित कर सकता है। लेकिन मुझे लगता है कि इसका उलटा भी सच है। आप यह साबित नहीं कर सकते कि दो अलग-अलग लेखक हैं क्योंकि आपको भाषा और शैली में अंतर के कुछ प्रमाण मिलते हैं। भाषा और शैली में ऐसा क्या अंतर है जो आपको इस निष्कर्ष पर मजबूर करेगा कि आपके पास दो अलग-अलग लेखक होने चाहिए? मुझे यकीन है कि अगर आप 15 साल पहले का अपना लेखन लें और उसकी तुलना उस चीज़ से करें जो आप आज लिख रहे हैं, तो आपको कुछ अंतर मिलेंगे; और फिर भी, आपने दोनों लिखे। इसलिए इस प्रकार के तर्क से, मुझे नहीं लगता कि आप निर्णायक रूप से या तो पुस्तक की एकता या असमानता को साबित कर सकते हैं। मुझे लगता है कि मार्गालियोथ ने जो किया है, वह उस तरह के तर्क के जवाब में है जिसे आलोचकों ने स्वीकार कर लिया है कि आप पुस्तक की एकता के लिए उतना ही ठोस तर्क दे सकते हैं जितना आप दो खंडों के बीच अंतर के लिए कर सकते हैं। तो, पुस्तक जटिल है, और भाषा जटिल है, और उपयोग जटिल हैं।

रेडडे का सांख्यिकीय भाषाई दृष्टिकोण और ओसवाल्ड की प्रतिक्रिया

अब आपके उद्धरणों के पृष्ठ 27 को देखें। एक और चीज़ है जिसके बारे में हम संभवतः अधिक से अधिक सुनेंगे: वह है बाइबिल सामग्री के कंप्यूटर भाषाई मूल्यांकन का उपयोग क्योंकि यह लेखकत्व के प्रश्नों से संबंधित है। यशायाह पर ओसवाल्ड की पुस्तक में, अध्याय 1-39 पर उनकी टिप्पणी, उन्होंने ड्यूटेरो-यशायाह के इस मुद्दे के संबंध में इसका उल्लेख किया है। ध्यान दें कि वह क्या कहता है, "एकता की कमी और एक रचना के वस्तुनिष्ठ प्रमाण के सबसे करीब जो वाई. रेडडे में दिखाई देता है प्रभावशाली जांच ,

सांख्यिकीय भाषाविज्ञान के प्रकाश में यशायाह की एकता। रैडडे ने यशायाह की पुस्तक की कई भाषाई विशेषताओं का कम्प्यूटरीकृत अध्ययन किया और पुस्तक के विभिन्न खंडों में उनकी तुलना की। नियंत्रण के रूप में, उन्होंने बाइबिल और अतिरिक्त-बाइबिल दोनों साहित्य के अन्य टुकड़ों का अध्ययन किया, जिनके बारे में माना जाता है कि वे एक ही लेखक से आए थे। इन शोधों के परिणामस्वरूप, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि भाषाई विविधताएँ इतनी गंभीर थीं कि एक लेखक यशायाह की पूरी पुस्तक का निर्माण नहीं कर सकता था। जैसा कि उम्मीद की जा सकती है, इन निष्कर्षों का आलोचनात्मक विद्वानों द्वारा अनुमोदन के साथ स्वागत किया गया, जिन्होंने अपनी स्थिति को सही साबित होते देखा। लेकिन वास्तव में रैडडे के निष्कर्ष कुछ विद्वानों के विचारों पर सवाल उठाते हैं। रैडडे की कार्यप्रणाली के संबंध में कई प्रश्न उठाए जा सकते हैं। सांख्यिकीय भाषाविज्ञान के क्षेत्र की प्रारंभिक अवस्था ही कुछ प्रश्न उठाती है। क्या हम अभी भी इतना जानते हैं कि किसी व्यक्ति के उपयोग में भिन्नता की संभावित सीमाओं के बारे में विश्वास के साथ बोल सकें?" मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही वास्तविक प्रश्न है।

ओसवाल्ट के साथ जारी रखते हुए, " ध्यान दें कि पुस्तक की विशेषताओं के एक अन्य प्रकार के कम्प्यूटरीकृत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि यह एक एकात्मक रचना है: एलएल एडम्स और एसी रिंचर, 'सांख्यिकीय शैली विश्लेषण के प्रकाश में यशायाह समस्या का लोकप्रिय आलोचनात्मक दृष्टिकोण,' *कंप्यूटर अध्ययन में*, 1973। वहां आपके दो अध्ययन विपरीत निष्कर्षों के साथ सामने आए हैं। फिर से ओसवाल्ट: "जबकि एक अन्य, ए. काशेर, 'द बुक ऑफ यशायाह: कैरेक्टराइजेशन ऑफ ऑथर्स बाय मॉर्फोलॉजिकल डेटा प्रोसेसिंग', ने एक फ्रांसीसी पत्रिका में निष्कर्ष निकाला कि रचना एक एकता नहीं है, लेकिन उनके परिणामों ने विभिन्न विभाजनों की ओर इशारा किया रैडडे की तुलना में पुस्तक। सांख्यिकीय दृष्टिकोण में निहित कठिनाइयों की समीक्षा के लिए, पॉस्नर की 'स्टाइलिस्टिक सांख्यिकी का उपयोग और दुरुपयोग' देखें।"

अब मुझे नहीं पता कि अध्ययन का वह क्षेत्र कहां जायेगा; मुझे लगता है कि यह अभी शुरुआत है, और मुझे संदेह है कि इसे आगे बढ़ाया जाएगा। ओसवाल्ट जो कहते हैं

वह निश्चित रूप से इस बिंदु पर कुछ उचित है: हम किसी विशेष व्यक्ति के उपयोग की भिन्नता की संभावित सीमाओं के बारे में विश्वास के साथ बोलने के लिए पर्याप्त नहीं जानते हैं। इस बिंदु पर अध्ययनों में वे विरोधाभासी हैं, हालांकि यह रेडडे का विश्लेषण है जिसे कई लोगों ने पकड़ लिया है। बस दावा करें, "कंप्यूटर विश्लेषण" - आपको बस यह कहना है और कई लोगों से कहना है जो इसे सुलझाता है; कंप्यूटर जानता है। लेकिन आप कंप्यूटर में किस तरह की चीजें फीड करते हैं और आप ये निर्णय कैसे लेते हैं?

वहां फुटनोट 5 पर वापस जाएँ। "इसमें से कोई भी उस अखंडता पर सवाल नहीं उठा रहा है जिसके साथ रेडडे का अध्ययन किया गया और निष्पादित किया गया था, लेकिन यह इंगित करना है कि साक्ष्य अभी भी पांडुलिपि के रूप में उद्देश्यपूर्ण नहीं है जिसमें केवल अध्याय 1-39 (या कुछ ऐसे) दिखाई देंगे।" दो यशायाह के लिए कोई पांडुलिपि साक्ष्य नहीं है। वास्तव में, आपके पास मृत सागर स्क्रॉल सामग्री है जो एक एकल पुस्तक है। यह हमारे पास सबसे पुरानी पांडुलिपि है। फुटनोट 6 पर ध्यान दें। "यह विडंबनापूर्ण है कि जिन लोगों ने यशायाह पर लागू होने वाली रेडडे की पद्धति की विश्वसनीयता की सराहना की, वे इसकी विश्वसनीयता के बारे में बहुत कम आश्चस्त थे जब उन्होंने हाल ही में बताया कि उसी पद्धति ने उत्पत्ति की पुस्तक की एकता स्थापित की है।"

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से तर्क यशायाह 1-39 [असीरिया] यशायाह 40-66 [बेबीलोन/फारस]

आइए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से तर्क पर चलते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि भाषा और शैली की दृष्टि से वह तर्क निर्णायक तर्क नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि आपको इसे दोनों तरह से देखना होगा। तर्क-वितर्क की प्रकृति का अर्थ है कि उस प्रकार के आधार पर एक सुसंगत तर्क का निर्माण करना बहुत कठिन है।

चलिए आगे बढ़ते हैं: " ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से प्राप्त एक तर्क।" मुझे लगता है कि शायद यही सबसे महत्वपूर्ण तर्क है। ऐसा नहीं है कि यह आवश्यक रूप से आश्चस्त करने वाला है, लेकिन मुझे लगता है कि तीन तर्कों में से यह निस्संदेह सबसे महत्वपूर्ण तर्क है। यह निर्विवाद है कि यशायाह 40-52 की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पुस्तक के पहले भाग की तुलना में

बहुत अलग है। जैसा कि हमने अब तक देखा है, पुस्तक के शुरुआती भाग में, इज़राइल के पाप के कारण बहुत अधिक फटकार, आने वाले निर्णयों की घोषणा और निर्वासन की भविष्यवाणी की गई है। फिर आप यशायाह 40 पर आते हैं और उसका अनुसरण करते हुए, आपके पास उस तरह की सामग्री नहीं है। दरअसल, स्थिति यह है कि लोग पहले से ही निर्वासन में हैं। अब जोर उस वादे पर है कि भगवान कैद से छुड़ाएंगे, इसलिए फैसले की घोषणा के बजाय, उनकी ओर से भगवान के हस्तक्षेप के वादे के साथ-साथ सांत्वना, आराम और आशा है।

पुस्तक के पहले भाग में अश्शूरियों के महान शत्रु के रूप में कई संदर्भ हैं। लेकिन आप पुस्तक के उत्तरार्ध में पहुँचते हैं, और यह असीरियन नहीं हैं जो दृश्य में हैं बल्कि बेबीलोनियाई हैं, और साइरस, फ़ारसी का उदय है। लोग बेबीलोनियों के बंधन में हैं, लेकिन जल्द ही फ़ारसी साइरस के माध्यम से भगवान के हाथ से बचाए जाएंगे। इसलिए पुस्तक के पहले और दूसरे भाग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बहुत भिन्न है।

अब, यह देखते हुए, इसे केवल दो तरीकों से समझाया जा सकता है। जिस तरह से आलोचकों का सुझाव है कि पुस्तक का उत्तरार्द्ध एक अलग लेखक द्वारा लिखा गया है जो निर्वासन शुरू होने के बाद रहता था, और प्रगति पर था, और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि उस लेखक की पृष्ठभूमि है जो बहुत बाद के समय में रहता था यशायाह. यह अंतर समझाने का एक तरीका है।

दूसरा तरीका यह है कि यह यशायाह ने लिखा है। ऐसा करने में, उन्हें निर्वासन में जाने के बाद अपने लोगों के लिए सांत्वना और आशा के इन शब्दों को लाने के लिए भगवान की आत्मा द्वारा नेतृत्व किया गया था: कि निर्वासन हमेशा के लिए नहीं होगा, लेकिन भगवान हस्तक्षेप करेंगे और उद्धार करेंगे। अब केवल यही दो तरीके हैं जिनसे आप इसे समझा सकते हैं। यदि आप बाद वाला दृष्टिकोण अपनाते हैं, यह विचार कि यशायाह लेखक है, तो आप अभी भी प्रश्न पूछ सकते हैं - और यह एक ऐसा प्रश्न है जो अक्सर पूछा जाता है: क्या यशायाह के कुछ लिखने का कोई उद्देश्य होगा जिसमें उन घटनाओं का संदर्भ होगा जो नहीं थीं उनके साथ घटित होने वाला था लेकिन क्या यह सुदूर भविष्य में घटित होने वाला था?

व्हाईब्रे की छोटी अध्ययन मार्गदर्शिका, दूसरे पैराग्राफ के अंतर्गत अपने उद्धरणों के पृष्ठ 28 को देखें। यह उनकी दूसरी यशायाह पुस्तिका के पृष्ठ 4 से आता है। वह कहते हैं, “यह स्पष्ट रूप से उन लोगों के एक समूह को संबोधित है, जिन्हें एक विजयी शक्ति द्वारा अपनी मातृभूमि से निर्वासित किया गया है, जिसे इस नाम से भी जाना जाता है: बेबीलोन। 4 परिच्छेदों (43:14, 47; 48:14, 20) में इन शब्दों में बेबीलोन के नाम की बात की गई है, और इस ऐतिहासिक स्थिति की पुष्टि कई अन्य परिच्छेदों से होती है। अध्याय 40-55 तब बना होगा” - ध्यान दें कि वह क्या कहता है - “8 वीं शताब्दी में इसका कोई मतलब नहीं था जब यरूशलेम और यहूदा के लोग अभी भी अपने राजाओं के शासन के तहत घर पर रह रहे थे ; जब बेबीलोन, एक महान शक्ति होने से बहुत दूर, सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में असीरिया के पतन तक, यशायाह की मृत्यु के लंबे समय बाद तक बना रहा - केवल असीरियन साम्राज्य के शहरों में से एक था; और जब साइरस का जन्म नहीं हुआ था और फ़ारसी साम्राज्य का अस्तित्व भी नहीं था। दूसरी ओर, इन अध्यायों में सब कुछ बेबीलोन में यहूदी निर्वासितों के लिए छठी शताब्दी के भविष्यवक्ता के संदेश के रूप में अच्छी तरह से समझ में आता है।

यशायाह के समय के लोगों के लिए यशायाह 40-66 का उद्देश्य वहाँ यशायाह के अपने समकालीनों के लिए यशायाह 40-66 की प्रासंगिकता के बारे में सवाल उठाया गया है - क्या इसकी उनके लिए कोई प्रासंगिकता है? देखिए, फ्रीडमैन उस प्रश्न पर क्या कहता है, आपके उद्धरणों का पृष्ठ 25। यह फ्रीडमैन के *पुराने नियम के पैगंबरों के परिचय से है*। वह कहते हैं, “प्रत्येक भविष्यवाणी को किसी निश्चित समसामयिक ऐतिहासिक स्थिति से जोड़ने की आवश्यकता नहीं है और न ही यह उस पीढ़ी पर सीधे लागू होती है जिसके लिए यह बोली जाती है। जैसा कि ड्राइवर का तर्क है, यह कायम नहीं रखा जा सकता कि भविष्यवक्ता हमेशा ऐसे व्यक्ति से बात करता है जो उसका अपना समकालीन होता है। वह जो संदेश लाता है उसका उसके समय की परिस्थितियों से गहरा संबंध होता है; उनके वादे और भविष्यवाणियाँ उन जरूरतों से मेल खाती हैं जो तब महसूस की जाती हैं। भविष्यवाणी की

इस अवधारणा में स्पष्ट विरोधाभास हैं: जकर्याह 9-14, जकर्याह के समकालीनों के समय से कहीं आगे की चीजों के बारे में बात करना; डैनियल 11-12, एंटीओकस एपिफेन्स के समय तक (लगभग 165 ईसा पूर्व); यशायाह 24-27--यह यशायाह का सर्वनाश है, वह अंत समय के बारे में बात कर रहा है--पहले से उल्लेखित लोगों के अलावा। निःसंदेह, यह उन ऐतिहासिक स्थितियों के साथ भविष्यवाणी के एक सामान्य संबंध को नज़रअंदाज नहीं करने जैसा है जिसे आगे कहा गया है। भविष्यसूचक कथन।” मुझे लगता है कि फ्रीडमैन जो कह रहे हैं, वह बिल्कुल स्पष्ट है कि सभी भविष्यवाणियों का उन समकालीनों पर प्रत्यक्ष और तत्काल प्रभाव नहीं पड़ता है जिनसे भविष्यवक्ता बात कर रहे थे; मुझे लगता है कि इसे मान लिया गया है।

जब आप यशायाह 40-66 पर पहुंचते हैं, भले ही फ्रीडमैन यह इंगित करने में सही है, मुझे लगता है कि आप अभी भी कह सकते हैं कि यशायाह 40-66 यशायाह के समय के लोगों के संबंध में एक उद्देश्य की पूर्ति करता है। पुस्तक के आरंभिक भाग में, यशायाह के दो उद्देश्य प्रतीत होते थे। सबसे पहले राष्ट्र को उसके पाप और पश्चाताप करने के कर्तव्य के बारे में बताना था; वह ऐसा बार-बार करता है। फिर दूसरा, यहूदा को यह बताना कि परमेश्वर उन्हें निर्वासन में भेजकर उनके पाप का दण्ड देने जा रहा है। वह भी बिल्कुल स्पष्ट था। ऐसे लोग भी थे जिन्होंने यशायाह की बात सुनी और उसके संदेश का जवाब दिया, हालाँकि वे अपवाद थे। अधिकांश भाग में, लोगों ने उसकी बात से मुँह मोड़ लिया; वे इसे सुनना नहीं चाहते थे।

यशायाह अध्याय छह की भविष्यवाणी पूरी हो रही थी। यशायाह के बुलावे के उस दर्शन को याद करें जिसे प्रभु ने यशायाह 6:9 में कहा था और उसके बाद, “जाओ इन लोगों से कहो: 'सुन तो लो, परन्तु न समझो; वास्तव में देखो, परन्तु अनुभव मत करो।' उनके कान भारी कर दो, उनकी आंखें बंद कर लो कि वे देख न लें," और इसलिए लोग इस संदेश का जवाब नहीं देने वाले थे, और अधिकांश भाग में उन्होंने ऐसा नहीं किया। वह पूरा हो रहा था।

यह भी स्पष्ट था कि 6:11 और 12 में भविष्यवाणी की गई निर्वासन अपरिहार्य थी। अध्याय 6 के छंद 11 और 12 देखें, " तब मैंने कहा, 'हे भगवान, कब तक?' और उस ने

उत्तर दिया, जब तक नगर उजड़े और उन में कोई बस न जाए, जब तक घर उजड़ न जाएं, और खेत उजड़ न जाएं, जब तक यहोवा सब को दूर न कर दे, और देश सूना न हो जाए।" वह निर्वासन के विषय में बोल रहा था। पहले से ही अध्याय 6 में। फिर उसने उन लोगों को आशा दी कि निर्वासन हमेशा के लिए नहीं रहेगा। मुक्ति मिलने वाली है, लेकिन यह ऐसा निर्णय नहीं था जो देश और लोगों को खत्म करने वाला था। भगवान हस्तक्षेप करने वाले थे और वे वापस आ जायेंगे। मुझे लगता है कि इससे ईश्वरीय शेष लोगों को सांत्वना मिली होगी - वे लोग जिन्होंने यशायाह की बात सुनी थी। क्योंकि, आप देखते हैं, यदि आप पता लगाते हैं कि यह हिजकिय्याह के बाद का है, तो आप मनश्शे के शासनकाल में पहुंच जाते हैं जहां चीजें बदतर हो जाती हैं, और जहां अगर हम राजाओं को देखें तो यह बहुत स्पष्ट हो जाता है कि निर्वासन अपरिहार्य है; और मुझे लगता है कि यशायाह का यह दूसरा भाग संभवतः मनश्शे के उस अंधकारमय काल के दौरान लिखा गया था।

तो आइए अगले घंटे की शुरुआत में उस बिंदु को उठाएं और तर्क की इस तीसरी पंक्ति पर अपनी चर्चा समाप्त करें: "ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अंतर।"

कैसी लार्सन
 द्वारा प्रतिलेखित कार्लो गीमन
 द्वारा प्रारंभिक संपादन टेड हिल्डे ब्रांट
 द्वारा कच्चा संपादन डॉ. पेरी फिलिप्स
 द्वारा अंतिम संपादन डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया